ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.20, No.1, Jan. – Mar., 2025/4

भारतीय संस्कृति के विसरण में प्रवासियों की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय दृष्टि

सत्यभामा एवं सत्येंद्र नारायण

https://doi.org/ 10.61410/had.v20i1.219

परिचय –

प्रसिद्ध समाजशास्त्री मजूमदार एवं मदान ने अपनी पुस्तक ''एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपोलॉजी'' में संस्कृति को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''संस्कृति जीवन जीने का एक तरीका है।''

भारतीय संस्कृति में विविधता में एकता है। जब लोग एक प्रदेश से दूसरे प्रदेशों में जाते हैं तो वह उसे प्रदेश की संस्कृति को भी सीखते हैं तथा गंतव्य स्थान वाले भी प्रवासी की संस्कृति को अंतर्मनभाव से सीखते हैं। वर्तमान समय में भारत में न केवल कई अहिंदी प्रदेशों में लोग हिंदी भाषा को सीख रहे हैं बल्कि विश्व के कई देशों में भी हिंदी भाषा का प्रचार– प्रसार हो रहा है। भारत के कई प्रदेशों में लोग एक दूसरे प्रदेश के भजन को बड़े प्रेम से ग्रहण कर रहे हैं। जैसे सत्तू, बाटी – चोखा, इडली और डोसा इत्यादि। भारत के लोग जब विदेशों में जाते हैं तो वहां पर भी अपनी भारतीय परंपराओं का निर्वाह करते हुए अपने आप को भारतीय संस्कृति से जोड़ कर रखते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप विश्व के कई देशों में भी भारतीय त्योहारों का प्रचलन तेजी से हो रहा है।

सोरोकिन ने अपनी पुस्तक ''सोशल एंड कल्चरल डायनामिक्स'' में तीन प्रकार की संस्कृति का उल्लेख किया है।

(1) चेतनात्मक संस्कृति

(2) भावात्मक संस्कृति

(3) आदर्शात्मक संस्कृति

प्रवास के कारण भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्व भावात्मक संस्कृति को पूरे विश्व में बढ़ावा मिला है।

प्रभास वह प्रक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति या समूह किसी निश्चित उद्देश्य से अपने मूल स्थान से गंतव्य स्थान की ओर जाते हैं।

साहित्य समीक्षा –

भारतीय संस्कृति पर निम्न पुस्तकों के माध्यम से शोधार्थी द्वारा अपने शोध पत्र को तैयार किया गया है।

1 – थापर रोमिला : सेमिनार नंबर 313, नई दिल्ली, सितंबर 1985 – इस पुस्तक के अनुसार हिंदू संस्कृति एक संरचित विश्वास व्यवस्था है। हिंदू संस्कृति सापेक्ष धर्म – निरपेक्षता की बात करती है मिथ्या – धर्मनिरपेक्षवाद की नहीं।

2 – श्रीनिवास एम. एन. : सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया, वर्कले यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1996 – इस पुस्तक के अनुसार भारतीय संस्कृति में पश्चिमीकरण अर्थात ब्रिटिश संस्कृति के खान–पान , वेशभूषा और जीवन शैली का बहुत अधिक प्रभाव आया है।

- **शोध छात्रा – समाजशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।**
- **आचार्य– समाजशास्त्र विभाग उपाधि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पीलीभीत।**

अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध पत्र का निम्न उद्देश्य है –

1– प्रवास की अवधारणा को स्पष्ट करना ।

2 – भारतीय संस्कृति के विसरण में प्रवासियों की भूमिका का विश्लेषण करना।

3 – भारतीय संस्कृति का अध्ययन करना।

4 – भारतीय संस्कृति के विसरण से समाज पर पड़े प्रभावों का आकलन करना।

अध्ययन की उपकल्पना –

प्रस्तुत शोध पत्र को निम्न उपकल्पनाओं द्वारा परिसीमित किया गया है –

1 – भारतीय संस्कृति हिंदू, मुस्लिम तथा ब्रिटिश संस्कृति का मिश्रण है।

2 – प्रवासियों ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया है।

3 – प्रवासियों ने भारतीय संस्कृति को विश्व के अन्य देशों में पहुंचाया है।

4 – भारतीय संस्कृति के अंदर अन्य संस्कृतियों को आत्मसात करने की क्षमता है।

अध्ययन की शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों पर आधारित है तथा इसमें कई समाजशास्त्रियों तथा प्रसिद्ध व्यक्तियों से साक्षात्कार और दूरभाष साक्षात्कार भी लिया गया है। प्राथमिक स्रोतों के लिए शोधार्थी ने अपने आसपास के प्रवासियों से साक्षात्कार के माध्यम से भारतीय संस्कृति के विसरण में उनकी भूमिका के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की है। द्वितीयक स्रोतों के लिए शोधार्थी ने प्रसिद्ध लेखकों, प्रसिद्ध समाज शास्त्रियों की पुस्तकें एवं उनके शोध पत्रों, समाचार पत्रों एवं सरकारी गजट आदि के माध्यम से अपने शोध पत्र को तैयार किया है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र आनुभविक अध्ययन पर भी आधारित है।

अध्ययन का विश्लेषण –

भारतीय संस्कृति अद्वितीय है। धर्म (मानकीय व्यवस्था) कर्म (वैयक्तिक, नैतिक, वचनबद्धता) और जाति सामाजिक स्तरीकरण के सोपानीय रूप में भारतीय संस्कृति की मुख्य अवधारणाएं हैं। भारत में कहा जाता है कि परिवर्तन संस्कृत व्यवस्था के अंतर्गत हुआ है न कि सांस्कृतिक व्यवस्था का। भारत में मुस्लिम और अंग्रेज मुख्य प्रवासी रहे हैं जिसके माध्यम से एक मिली जुली संस्कृति का विकास हुआ है।

मुगल बादशाह अकबर ने दीन–ए–इलाही के नाम से राजकीय धर्म की अवधारणा को क्रियान्वित किया था जो हिंदू और इस्लामिक संस्कृति का संयुक्त संश्लेषण था। कबीर और नानक पर इस्लाम के उपदेशों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा था। भारत में न केवल हिंदुओं की ही पवित्र भूमि है बल्कि मुसलमान और ईसाइयों के भी पवित्र स्थल हैं। आज अंग्रेजी और हिंदी पूरे देश में बोली जा रही है जो कि संवाद का माध्यम है। गजल, लावणी, ठुमरी, कव्वाली, धुंन व तरंग हिंदू और मुस्लिम दोनों गा रहे हैं। कथक शैली हिंदू व मुस्लिम दोनों प्रयोग करते हैं। उर्दू हिंदू व मुस्लिम दोनों की मिली जुली भाषा है। इसी प्रकार आज भारतीय संस्कृति में ब्रिटिश संस्कृति के रीति–रिवाज, परंपरा का अधिक प्रयोग हो रहा है।

भारत में लोग एक प्रदेश के निवासी दूसरे प्रदेशों में जाते हैं जिससे भारतीय संस्कृति को समृद्धता मिलती है। विशेष कर स्थानीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार होता है। अभी कुंभ के मेले में पूरे भारत तथा विश्व के कई देशों से लोग प्रयागराज कुंभ में आए जिससे एक नई भारतीय संस्कृति देखने को मिला। उसमें न कोई बंगाली था, न कोई पंजाबी, न कोई मद्रासी बल्कि सभी हिंदू थे। आजकल छठ पूजा पूरे भारतवर्ष में मनाई जा रही है। इस प्रकार लघु परंपरा का विस्तार होकर महान परंपरा बन रहा है। इन सब के माध्यम से भारतीय संस्कृति का लगातार विसरण हो रहा है एवं जिससे वह समृद्ध हो रही है।

निष्कर्ष –

आजकल प्रवासियों के कारण भारत में एक मिली–जुली संस्कृति देखने को मिल रही है। लोग अपने बच्चों को अंग्रेजी पढ़ना अधिक पसंद करते हैं। अधिकतर अंग्रेजी माध्यम से पढ़े कुछ हुए विद्यार्थी ही उच्च सेवाओं में अपना स्थान सुनिश्चित कर पा रहे हैं। आम बोलचाल में भी हम उर्दू और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग कर रहे हैं। हमारे खान–पान और वेशभूषा में भी एक इस्लामी और ब्रिटिश संस्कृति का मिश्रण देखने को मिल रहा है। यह सब प्रवासियों द्वारा अपनी संस्कृति एवं सभ्यता का अन्य देशों में विसरण के माध्यम से हुआ है। यह सिर्फ भारत में ही नहीं है बल्कि विश्व के अन्य देशों में भी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की इसी प्रकार स्पष्ट छाप को देखा जा सकता है।

संदर्भ सूची –

1 – मजूमदार एवं मदान : एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपॉलजी, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे, 1963

2 – थापर रोमिला : सेमिनार नंबर 313, नई दिल्ली, सितंबर 1985

3 – सोरोकिन : सोशल एंड कल्चरल डायनॉमिक्स, अमेरिकन बुक कंपनी, न्यूयॉर्क, 1937

4 – शर्मा के.एल. : भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2010

5 – आहूजा राम : भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2009

6 –हसनैन नदीमः समकालीन भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिदृश्य, भारत बुक सेंटर, लखनऊ, 2005

7 – सिंह देवराज : अनमोल हमारी थाती है (भारत का गौरवशाली इतिहास व परंपरा), सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023

8 – श्रीनिवास एम.एन. : सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया, वर्कले : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1966

9 – सिंह योगेंद्र : मॉडर्नाइजेशन आफ इंडियन ट्रेडीशन, थॉमसन प्रेस, नई दिल्ली, 1973